सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी

शिक्षाशास्त्र विभाग

शिक्षाशास्त्री(बी०एड्०)

निर्देशिका एवं पाठ्यक्रम प्रारूप

सत्र 2018-20 से प्रवृत्त

शिक्षाशास्त्री – निर्देशिका
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

प्रवेश –

1. उत्तर प्रदेश शासन/विश्वविद्यालय की नियम व्यवस्था के अनुसार प्रवेश लिया जायेगा।

2. शिक्षाशास्त्री में प्रवेश के लिये निम्नलिखित अर्हताएं होनी चाहिए –
   i. सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय की स्नातक (शास्त्री) परीक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए।

   अथवा

   ii. सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा इस प्रयोजन के लिये मान्य किसी अन्य विश्वविद्यालय की **स्नातक स्तर पर तीनों वर्षों में संस्कृत के साथ स्नातक उपाधि।**
   iii. स्नातक परीक्षा में प्रवेश हेतु अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के अभ्यर्थियों के अतिरिक्त अन्य अभ्यथियों को 50 प्रतिशत अंक प्राप्त करना अनिवार्य है।
   iv. शासन द्वारा समय–समय पर किये जाने वाले संशोधन भी आवश्यक रूप से पालनीय होगें।

3. **प्रवेश का निरस्तीकरण–**

i. लगातार बिना लिखित सूचना के 15 दिन तक अनुपस्थित रहने की दशा में अभ्यर्थी का प्रवेश निरस्त समझा जायेगा।

ii. शिक्षाशास्त्री के अध्ययन काल में प्रवेशार्थी कोई भी पूर्णकालिक या अंशकालिक कार्य जिसमें वेतन मिलने की सुविधा हो, स्वीकार नहीं कर सकता। ऐसा करने पर प्रवेशार्थी का प्रवेश निरस्त कर दिया जायेगा।

iii. प्रवेशार्थी का प्रवेश अस्थायी (Provisional) होगा। अध्ययन/परीक्षा पूर्णता के अनन्तर यदि उसके द्वारा किसी भी प्रकार का तथ्य गोपन करके अथवा असत्य सूचना पर प्रवेश लिया गया है तो उसका प्रवेश स्वतः निरस्त हो जायेगा।

iv. अध्ययन/प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले प्रवेशार्थी के लिए नियमो एवं अनुशासन का पालन करना आवश्यक होगा। अनुशासनहीनता की स्थिति में छात्र/छात्रा का प्रवेश निरस्त कर दिया जायेगा।

4. **शिक्षाशास्त्री परीक्षा में सम्मिलित होने के लिए निम्नलिखित अर्हता अनिवार्य है –** राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् अधिसूचना 2014 के अनुपालन में सत्र 2014–16 से शिक्षाशास्त्री पाठ्यक्रम द्विवर्षीय कर दिया गया है। प्रत्येक वर्ष सत्र के अन्त में वार्षिक परीक्षा ली जायेगी। **परीक्षा में सम्मिलित होने के लिये निम्नलिखित शर्तें अनिवार्य है–**

   (क) सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय अथवा इस विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालय में निर्धारित शिक्षाशास्त्री पाठ्यक्रम में नियमित रूप से अध्ययन किया हो।
   (ख) कक्षादि व्याख्यानों में जिसने 80 प्रतिशत उपस्थिति अर्जित की हो।
   (ग) समय से शुल्क का भुगतान किया हो।
   (घ) उसका आचरण एवं व्यवहार उत्तम हो।

Vishal Jha

(ङ) प्रत्येक वर्ष की परीक्षा हेतु निर्धारित अर्हता पूर्ण करता हो। आन्तरिक मूल्यांकन प्रक्रिया में सम्मिलित हुआ हो। प्रायोगिक कार्यों एवं दत्तकार्यों को विधिवत पूरा किया हो, वह शिक्षाशास्त्री उपाधि निमित्त वार्षिक परीक्षा में सम्मिलित हो सकता है। प्रत्येक विद्यार्थी को सैद्धान्तिक, प्रायोगिक, आन्तरिक मूल्यांकन एवं अन्य क्रियाकलापों में भाग लेना अनिवार्य है।

(च) किसी कारणवश प्रथम वर्ष की परीक्षा से वंचित छात्र अगले वर्ष उसी प्रथम वर्ष की परीक्षा में सशुल्क (शिक्षण शुल्क के अतिरिक्त शेष पूरा शुल्क जमा करके) प्रायोगिक एवं दत्तकार्य पूरा करने पर, विभागाध्यक्ष की संस्तुति पर कुलपति की अनुमति से सम्मिलित हो सकता है। इसी प्रकार द्वितीय वर्ष की परीक्षा में किसी कारणवश् परीक्षा से वंचित छात्रों के सम्बन्ध में भी उपरोक्त व्यवस्था ही लागू रहेगी।

5. सत्र/बैच का निर्धारण प्रवेशित सत्र से अगले सत्र के आधार पर होगा। उदारणार्थ यदि छात्राध्यापक का प्रवेश वर्ष 2018 में होता है तो बैच का नाम 2018–2020 होगा।
6. अंक पत्र पर बैच/सत्र का नाम तथा वर्तमान वर्ष एवं खण्ड का उल्लेख होगा।

शिक्षाशास्त्री परीक्षा योजना –

1. कोई परीक्षार्थी हिन्दी या संस्कृत में प्रश्नों के उत्तर दे सकता है।
2. प्रत्येक सैद्धान्तिक प्रश्नपत्र 100 अंको का होगा जिसमें 80 अंक लिखित (वाह्य) परीक्षा के तथा 20 अंक सतत् आन्तरिक मूल्यांकन का होगा।
   i. प्रत्येक प्रश्न पत्र की 80 अंको की लिखित परीक्षा में प्रथम भाग–20 अंको का प्रथम प्रश्न लघु उत्तरीय होगा, जिसमें चार–चार अंको के पांच प्रश्न होंगे। (4x5=20) यह प्रश्न अनिवार्य होगा जिसमें कोई विकल्प नहीं होगा।
   ii. शेष 60 अंको के द्वितीय भाग में 15–15 अंको के आठ दीर्घ उत्तरीय प्रश्न होंगे। जिनमें से परीक्षार्थी को चार प्रश्नों के उत्तर देने होंगें। (4x15=60)
3. प्रायोगिक एवं दत्तकार्य तथा अन्य सुसम्बद्ध गतिविधियों के लिए अंको का वर्षवार विवरण आगे पाठ्यक्रम प्रारूप में भी वर्णित है।
4. प्रायोगिक परीक्षा, सतत् एवं आंतरिक मूल्यांकन तथा दत्त कार्यों एवं अन्य गतिविधियों का मूल्यांकन विभागीय समिति द्वारा किया जायेगा जिसके संयोजक विभागाध्यक्ष होंगें।
5. प्रायोगिक परीक्षा के लिए तीन सदस्यीय परीक्षा परिषद होगी जिसमें दो वाह्य परीक्षक तथा एक आन्तरिक परीक्षक होगा। विश्वविद्यालय एवं सम्बद्ध महाविद्यालय के शिक्षाशास्त्र विभाग के अध्यक्ष आन्तरिक परीक्षक के साथ–साथ इस परिषद के संयोजक का कार्य करेंगें।
6. जिन सम्बद्ध महाविद्यालयों में शिक्षाशास्त्र विभागाध्यक्ष का पद नहीं है वहां महाविद्यालय के प्राचार्य द्वारा महाविद्यालय के शिक्षाशास्त्र विभाग के स्थायी अध्यापकों मे से एक को वरीयता क्रम में प्रतिवर्ष परीक्षा संयोजक नामित किया जायेगा। जो अपने महाविद्यालय की शिक्षाशास्त्री प्रायोगिक परीक्षा में परीक्षा संयोजक तथा आन्तरिक परीक्षक का कार्य करेगा।
7. जिन स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में शिक्षाशास्त्र विभाग का स्थायी विभागाध्यक्ष विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित नहीं है वहां पर विश्वविद्यालय के शिक्षाशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष आन्तरिक परीक्षक के साथ–साथ इस परिषद के संयोजक का कार्य करेंगे।
8. एक वर्ष से दूसरे वर्ष की परीक्षा मे दो वर्ष से अधिक अन्तराल में अनुमन्य नहीं है।

Vidyadhar Jha

उत्तीर्णता के नियम–

1. प्रत्येक प्रश्न पत्र में न्यूनतम 36 प्रतिशत तथा सम्पूर्ण में न्यूनतम 40 प्रतिशत प्राप्तांक होने पर ही उत्तीर्ण होगा। इस बाध्यता के साथ कि सैद्धान्तिक, आन्तरिक मूल्यांकन तथा प्रयोगात्मक सभी परीक्षाओं में अलग–अलग पत्रों में स्वतंन्त्र रूप से न्यूनतम 36 प्रतिशत अंक प्राप्त हो।
2. **श्रेणी का निर्धारण**–द्वितीय खण्ड के ऐसे परीक्षार्थी जो द्वितीय खण्ड के उत्तीर्ण होने तथा परीक्षाफल प्रकाशन के समय से पूर्व प्रथम खण्ड की परीक्षा भी उत्तीर्ण कर चुके हो (कोई शैक्षणिक कार्य/गतिविधि अपूर्ण न हो) का दोनो खण्डो के प्राप्तांकों के योग के आधार पर श्रेणी का निर्धारण निम्नवत् होगा।

   प्रथम श्रेणी – 60 प्रतिशत या उससे अधिक
   द्वितीय श्रेणी – 48 प्रतिशत या उससे अधिक तथा 60 प्रतिशत से कम
   तृतीय श्रेणी – 40 प्रतिशत या उससे अधिक तथा 48 प्रतिशत से कम

3. शिक्षाशास्त्री का पाठ्यक्रम अधिकतम चार वर्षों में पूर्ण करना अनिवार्य है। यदि अधिकतम चार वर्षो में किसी भी कारण से पाठ्यक्रम पूर्ण नहीं होता है तो उसका प्रवेश स्वतः निरस्त माना जायेगा। एतदर्थ छात्र को अलग से कोई सूचना नहीं दी जायेगी।
4. शिक्षाशास्त्री प्रथम खण्ड में यदि परीक्षार्थी मात्र एक प्रश्न पत्र में अनुत्तीर्ण/ अनुपस्थित होता है तो वह उस प्रश्न पत्र में बैक परीक्षा हेतु अनुमन्य होगा तथा उसके सफलता के स्वयं के जिम्मेदारी के साथ द्वितीय खण्ड की परीक्षा में सम्मिलित हो सकेगा। यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि ऐसे परीक्षार्थी के लिए उनकी बैक परीक्षा हेतु प्रथम खण्ड के वर्ष के अगले वर्ष में मात्र अनुमन्य होगी।
5. यदि छात्र प्रथम खण्ड का परीक्षावेदन पत्र पूरित कर परीक्षा में पूर्णतया अनुपस्थित है अथवा परीक्षा में प्रविष्ट होकर एक से अधिक पत्रों में अनुत्तीर्ण है तो उसे प्रथम खण्ड की सम्पूर्ण परीक्षा भूतपूर्व छात्र के रूप में अगले सत्र में देनी होगी, जिसके सफलतापूर्वक पूर्ण होने पर ही उसके अगले वर्ष में द्वितीय खण्ड में नियमित छात्र के रूप में प्रवेशित होकर नियमानुसार द्वितीय खण्ड की परीक्षा में सम्मिलित हो सकेगा।
6. यदि किसी छात्र ने पूरे सत्र अध्ययन करते हुये प्रायोगिक एवं सत्रीय कार्य भी पूर्ण किया है, किन्तु किसी कारणवश परीक्षावेदन पत्र पूरित नहीं कर सका तथा परीक्षा से वंचित रह गया ऐसे छात्र अगले वर्ष की परीक्षा में विभागाध्यक्ष/प्रचार्य (सम्बन्धित महाविद्यालय के लिए) की संस्तुति पर कुलपति महोदय की स्वीकृति के उपरान्त निर्धारित परीक्षा शुल्क देकर भूतपूर्व छात्र के रूप में सम्मिलित हो सकेगा

परीक्षा समिति दिनांक 10.04.2018 के निर्णयानुसार

शिक्षाशास्त्री अनुत्तीर्ण/बैक/श्रेणी सुधार के सम्बन्ध में व्यवस्था –

1. यदि कोई परीक्षार्थी प्रथम वर्ष की परीक्षा में किसी एक या एकाधिक विषयों/प्रश्नपत्र में अनुत्तीर्ण हो जाता है तो उसे द्वितीय वर्ष में इस शर्त के साथ अध्ययन/परीक्षा की अनुमति देय होगी कि वह द्वितीय वर्ष के साथ–साथ प्रथम वर्ष की अनुर्त्तीण परीक्षा भी उर्त्तीण कर लेगा/लेगी।
2. यदि छात्र/छात्रा एक प्रश्नपत्र में अनुत्तीर्ण है तो उसी प्रश्न–पत्र जिसमें वह अनुत्तीर्ण है उसे बैक परीक्षा अनुमन्य होगी किन्तु एक से अधिक प्रश्नपत्रों में अनुत्तीर्ण होने की स्थिति में उसे सभी प्रश्नपत्रों की **पुनः बैक परीक्षा देनी होगी।**
3. यदि छात्र/छात्रा द्वितीय वर्ष की परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाता है किन्तु प्रथम वर्ष की परीक्षा में पुनः अनुत्तीर्ण हो जाता/जाती है तो उसका द्वितीय वर्ष का परीक्षाफल अवरूद्ध कर दिया जायेगा तथा उसे प्रथम वर्ष की अनुत्तीर्ण परीक्षा को उत्तीर्ण करने का सशुल्क एक अन्तिम अवसर और प्रदान किया जायेगा। यदि इस बार (तीसरी बार) भी छात्र/छात्रा अनुत्तीर्ण हो जाता/जाती है तो भविष्य में उसे शिक्षाशास्त्री प्रथम वर्ष की परीक्षा में बैठने का कोई अवसर नहीं प्राप्त होगा।
4. यदि कोई छात्र/छात्रा प्रथम वर्ष की अनुत्तीर्ण परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाता/जाती है किन्तु द्वितीय वर्ष की परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाता/जाती है तो उसे द्वितीय वर्ष की अनुत्तीर्ण परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए मुख्य परीक्षा के अतिरिक्त मात्र दो (मुख्य एवं दो कुल तीन) अवसर प्राप्त होगें। यदि इस (1 +2=3) पर भी छात्र/छात्रा उक्त परीक्षा उत्तीर्ण नहीं कर पाते हैं तो उनको इस सम्बन्धित परीक्षा में बैठने का भविष्य में कोई अवसर प्राप्त नहीं होगा।
5. यदि कोई छात्र/छात्रा प्रथम वर्ष में अनुत्तीर्ण होने पर द्वितीय वर्ष में अध्ययन हेतु सशर्त प्रविष्ट होता है तथा द्वितीय वर्ष की परीक्षा के साथ–साथ प्रथम वर्ष की अनुत्तीर्ण परीक्षा में बैक परीक्षार्थी के रूप में भाग लेता है **और दोनों वर्षों की परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाता है अथवा प्रथम वर्ष/द्वितीय वर्ष अथवा दोनों वर्ष की परीक्षा में किसी कारणवश सम्मिलित नहीं होता है तो उसे पहले प्रथम वर्ष की परीक्षा उत्तीर्ण करनी होगी और इसके लिए उसे बिन्दु 03 में वर्णित अवसर (कुल मिलाकर 03) प्राप्त होगें।** प्रथम वर्ष उत्तीर्ण होने पर ही द्वितीय वर्ष की परीक्षा में बैठने की अनुमति प्राप्त होगी। यदि 03 प्रयासों में भी छात्र/छात्रा शिक्षा शास्त्री प्रथम वर्ष परीक्षा उत्तीर्ण नहीं कर पाते तो उनकों द्वितीय वर्ष परीक्षा में बैठने का अवसर प्राप्त नहीं होगा तथा द्वितीय वर्ष का परीक्षाफल निरस्त समझा जायेगा।
6. अंकपत्र पर परीक्षार्थी का मूल सत्र (जो भी हो) अंकित होने के साथ ही जिस सत्र/वर्ष में वह परीक्षा उत्तीर्ण करेगा/करेगी उसका भी बैक/श्रेणी सुधार/भूतपूर्व (जैसा भी रहे) उल्लेख किया जायेगा।

Vikash

शिक्षाशास्त्र विभाग

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय,वाराणसी।

द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री पाठ्यक्रम प्रारूप (प्रस्तावित)

प्रथम वर्ष

कोर्स / पेपर	कोर्स कोड	प्रश्न पत्र	प्रश्नपत्र शीर्षक	क्रेडिट	पूर्णांक
शिक्षा के परिप्रेक्ष्य (Perspective of Education)	101	प्रथम प्रश्न पत्र	वर्तमान भारतीय परिप्रेक्ष्य में शिक्षा एवं समाज	4	80+20=100
	102	द्वितीय प्रश्न पत्र	बाल विकास एवं शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार	4	80+20=100
	103	तृतीय प्रश्न पत्र	मूल्यांकन एवं सांख्यिकी	4	80+20=100
	104	चतुर्थ प्रश्न पत्र	अधिगम और शिक्षण तकनीकी	4	80+20=100
शिक्षण विषय प्रथम	105	पंचम प्रश्न पत्र	अनिवार्य संस्कृत	4	80+20=100
शिक्षण विषय द्वितीय	106	षष्ठ प्रश्न पत्र	हिन्दी(क), अंग्रेजी(ख), इतिहास(ग), भूगोल(घ), नागरिकशास्त्र(ङ), अर्थशास्त्र(च) (में से कोई एक)	4	80+20=100
व्यावसायिक क्षमता संवर्धन (E.P.C.)			1. स्वाध्याय एवं अभिव्यक्ति (Reading & Reflection) 2. सूचना एवं संचार तकनीकी (I.C.T.)का व्यावहारिक प्रयोग। 3. नाट्य ,संगीत,कला एवं शारीरिक शिक्षा	2 2 2	50 50 50
प्रयोगाभ्यास (Internship) पूर्व तैयारी (विद्यालय सम्बद्धता) 28 दिन (7+7+7+7)			पूर्व माध्यमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापकों एवं छात्रों से सम्पर्क एवं शिक्षण 10+10 सूक्ष्म पाठयोजना, 10+10 आदर्श (Model) पाठयोजना	2	50
				32	(600+200=800)

द्वितीय वर्ष

कोर्स / पेपर	कोर्स कोड	प्रश्न पत्र	प्रश्नपत्र शीर्षक	क्रेडिट	पूर्णांक
शिक्षा के परिप्रेक्ष्य (Perspective of Education)	201	प्रथम प्रश्न पत्र	शैक्षिक प्रशासन,विद्यालय प्रबन्धन एवं स्वास्थ्य शिक्षा	4	80+20=100
	202	द्वितीय प्रश्न पत्र	ज्ञान,पाठ्यक्रम एवं मूल्याधारित शिक्षा	4	80+20=100
	203	तृतीय प्रश्न पत्र	माध्यमिक शिक्षा एवं समावेशन	4	80+20=100
	204	चतुर्थ प्रश्न पत्र	वैकल्पिक प्रश्न पत्र (एक का चयन) क. समाज एवं शिक्षा में लिंगभेद ख. शान्ति एवं सद्भाव के लिये शिक्षा ग. शैक्षिक निर्देशन और परामर्श घ. पर्यावरण शिक्षा ङ. योग शिक्षा	4	80+20=100
प्रयोगाभ्यास (Internship) (विद्यालय सम्बद्धता) 16 सप्ताह			क.विषय शिक्षकों के निर्देशन एवं अध्यापक प्रशिक्षकों के पर्यवेक्षण में कक्षा शिक्षण और समस्त विद्यालयी गतिविधियों में सहभागिता ,व्यक्ति अध्ययन (समूह योजना) ख.दो शिक्षण विषयों की प्रायोगिक परीक्षा	14	100 150
व्यावसायिक क्षमता संवर्धन (E.P.C.)			1. व्यक्तित्व बोध (प्रयोग एवं परीक्षण) 2. विद्यालय एवं समुदाय सम्बन्धित गतिविधियाँ,स्काउट गाइड , शैक्षिक भ्रमण आदि।	2	50
				32	700

पूर्णांक विवरण

पूर्णांक =1500

शिक्षाशास्त्री परीक्षा

प्रथम वर्ष –सैद्धान्तिक – 800 प्रायोगिक –200 = 800
द्वितीय वर्ष–सैद्धान्तिक – 400 प्रायोगिक –300 = 700

कुल योग =1500

शिक्षाशास्त्री करने के उद्देश्यों का निर्धारण किया गया जो निम्नवत् है–

कार्यक्रम परिणाम (Programme Outcome)

- शिक्षाशास्त्री कार्यक्रम सफलतापूर्वक पूर्ण करने के पश्चात् छात्राध्यापक / छात्राध्यापिका एक कुशल व योग्य अध्यापक बन सकेंगे।
- छात्राध्यापक / छात्राध्यापिका एक शिक्षक के दायित्वों को समझ सकेंगे।
- समाज की आवश्यकताओं व भविष्य की संभावनाओं के अनुसार शिक्षकों की तैयारी हो सकेगी।
- वर्तमान अपेक्षित कौशलों में भावी शिक्षकों पारंगत हो सकेंगे
- छात्राध्यापक / छात्राध्यापिकाओं में अपेक्षित व्यवहार परिवर्ततन हो सकेगा।
- संस्कृत भाषा व विषय विशेष के योग्य अध्यापक बन सकेंगे।

प्रथम वर्ष

प्रथम प्रश्न पत्र

(कोर्स कोड 01)

वर्तमान भारतीय परिप्रेक्ष्य में शिक्षा एवं समाज

क्रेडिट–4 घण्टे : 80 पूर्णांक–80+20=100

कोर्स उद्देश्य –

1. छात्राध्यापक शिक्षा और दर्शन के सम्प्रत्यय और सम्बन्ध का स्पष्ट करेंगे।
2. प्रमुख वैदिक, बौद्ध, जैन, इस्लामिक शिक्षा की अवधारणाओं की आधुनिक परिप्रेक्ष्य में समालोचना कर सकेंगे।
3. समाजीकरण, सामाजिक परिवर्तन, संस्कृति, सामाजिक गतिशीलता के सम्प्रत्ययों और शिक्षा से उनके सम्बन्ध का स्पष्ट करेंगे।
4. समकालीन भारतीय शिक्षा व राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक पक्षों का स्पष्ट करेंगे।
5. मूल्य शिक्षा की अवधारणा का स्पष्ट करेंगे।

पूर्णांक –80

इकाई–प्रथम

1. शिक्षा और दर्शन का अर्थ, परिभाषा, क्षेत्र एवं दर्शन के प्रमुख पक्ष।
2. शिक्षा के दार्शनिक सिद्धान्त प्रकृतिवाद–आदर्शवाद, प्रयोजनवाद, यथार्थवाद।
3. प्राचीन वैदिक, जैन एवं इस्लामिक शिक्षा की अवधारणा एवं आधुनिक शिक्षा पर उनका प्रभाव।
4. मूल्य–सम्प्रत्यय, प्रकार एवं मूल्यपरक शिक्षा–आवश्यकता एवं क्रियान्वयन।
5. स्वामी विवेकानन्द, अरविन्द घोष, रवीन्द्रनाथ टैगोर और महात्मा गांधी, गिजुभाई के शैक्षिक विचार।

इकाई–द्वितीय

1. समाजीकरण अर्थ, प्रक्रिया व समाजीकरण में शिक्षा की भूमिका।
2. सामाजिक परिवर्तन के साधन के रूप में शिक्षा।
3. संस्कृति–अवधारणा, सांस्कृतिक विरासत और शिक्षा।
4. सामाजिक गतिशीलता–अर्थ, शिक्षा की भूमिका।
5. सांस्कृतिक विलम्बन, सामाजिक स्तरीकरण।

इकाई–तृतीय

1. संवैधानिक मूल्य– समाजवाद, धर्मनिरपेक्षतावाद एवं प्रजातांत्रिक शासन के विकास में शिक्षा की भूमिका।
2. प्राथमिक शिक्षा का सार्वभौमीकरण – RTE-2009
सर्वशिक्षा अभियान, शिक्षा का अधिकार कानून–2009
[illegible] माध्यमिक शिक्षा।
वैश्वीकरण, उदारीकरण एवं निजीकरण का भारतीय शिक्षा पर प्रभाव।
3. [illegible] एवं [illegible] की शिक्षा में भूमिका।
4. जनसंचार साधनों की शिक्षा में भूमिका।
[illegible] [illegible] और [illegible]।

आंतरिक आंकलन **पूर्णांक–20**

– आंतरिक आंकलन हेतु एसाइनमेन्ट, परीक्षण, प्रोजेक्ट, प्रस्तुतीकरण, प्रायोगिक कार्य इत्यादि।

सहायक ग्रन्थ –

1. रामशकल पाण्डेय– शिक्षा दर्शन, शारदा पब्लिकेशन।
2. रमन बिहारी लाल– शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय आधार, आर0लाल डिपो प्रकाशन।
3. एल0के0ओड़– शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी जयपुर।
4. कलाम ए.पी.जे.अब्दुल और राजन, वहि सुदंर (1999) इक्कीसवीं सदी का भारत, राजपाल एण्ड सन्स नयी दिल्ली।
5. चोपड़ा रविकान्ता– उभरते समाज में शिक्षक और शिक्षा, एन0सी0ई0आर0टी0 नई दिल्ली।
6. श्री निवास एस.एन. आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन राजकमल, प्रकाशन, दिल्ली।
7. रूहेला सत्यपाल (1983) भारतीय शिक्षा का समाजशास्त्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।

8- शर्मा, आर.के.शिक्षा के दर्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा।

9- Jayram, N.(1990) Sociology of Education in India. Rawat Pub.Jaipur.

10- S.P.Chaube (1993) Education Philosophy in India] Vikas Publication House, Delhi.

11- Bhatia, K.K.and Purohit, J (1993), Principles and Practices of Education Kalyani Pub.,Delhi.

12- Lakshmi, N.1989 Innovation in Education Sterling Pub.New Delhi.

Vibhuti Shukla

द्वितीय प्रश्न पत्र

कोर्स कोड 102

बालविकास एवं शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार

क्रेडिट-4 घण्टे : 60 **पूर्णांक-80+20=100**

कोर्स लक्ष्य –

1. शिक्षा मनोविज्ञान का अर्थ, उपयोगिता, क्षेत्र और विधियों को समझ सकेंगे।
2. बाल विकास की अवस्थाओं और बालकों और किशोरों की अवस्थागत समस्याओं को समझ सकेंगे, उनका समाधान कर सकेंगे।
3. बुद्धि के सम्प्रत्यय, प्रकार और परीक्षणों का ज्ञान हो सकेगा।
4. व्यक्तिगत विकास के विभिन्न मतों को समझ सकेंगे।
5. सृजनात्मकता, अभिप्रेरणा और अन्य मनोवैज्ञानिक सम्प्रत्ययों की शिक्षा में भूमिका का ज्ञान सकेंगे।

पूर्णांक-80

इकाई–प्रथम

1. शिक्षा मनोविज्ञान–अर्थ, परिभाषा और अध्ययन की विधियां।
2. शिक्षा और मनोविज्ञान का सम्बन्ध,शिक्षा मनोविज्ञान का उद्देश्य,शिक्षा मनोविज्ञान का क्षेत्र।
3. अध्यापक के लिए शिक्षा मनोविज्ञान का महत्व।

इकाई–द्वितीय

1. बालविकास–प्रकृति एवं अवस्थायें।
   शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था में शारीरिक, संज्ञानात्मक, सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास का स्वरूप।
2. बालकों और किशोरों की अवस्थागत समस्यायें और उनके समाधान में शिक्षक की भूमिका।

इकाई–तृतीय

1. बुद्धि–अर्थ, परिभाषा एवं प्रकार(भारतीय संकल्पना–अंतःकरण चतुष्टय)
2. बुद्धि के सिद्धान्त– एकतत्व सिद्धान्त, द्वितत्व सिद्धान्त, बहुतत्व सिद्धान्त, समूहकारक सिद्धान्त, त्रिआयामी सिद्धान्त।
3. बुद्धि परीक्षण के प्रकार, उपयोगिता।
4. सृजनात्मकता– अर्थ, परिभाषा, बुद्धि और सृजनात्मकता का सम्बन्ध, शिक्षा द्वारा सृजनात्मकता बढ़ाने के उपाय।

इकाई–चतुर्थ

1. व्यक्तित्व–अर्थ, परिभाषा एवं प्रकार।(भारतीय,पंचकोशीय)
2. व्यक्तित्व के विकास में वंशानुक्रम एवं वातावरण की भूमिका।
3. व्यक्तिगत भिन्नता – अभिप्राय, शिक्षा में उपयोगिता।
4. विशिष्ट बालक, अर्थ, प्रकार और उनकी शिक्षा
5. अभिप्रेरणा–अर्थ, परिभाषा, आवश्यकता, महत्व एवं सिद्धान्त और विधियाँ।

V.Lal.

आंतरिक आंकलन **पूर्णांक–20**

– आंतरिक आंकलन हेतु एसाइनमेन्ट, परीक्षण, प्रोजेक्ट, प्रस्तुतीकरण, प्रायोगिक कार्य इत्यादि।

सहायक ग्रन्थ –

1. सिंह, ए.के.शिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन।
2. पाठक बी.डी.शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर।
3. गुप्ता, एस.पी., उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, ारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
4. सिंह रामपाल मनोविज्ञान के सम्प्रदाय, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
5. भटनागर, एस.,शिक्षा मनोविज्ञान, लीगल बुक डिपो, आगरा।
6. माथुर, एस. शिक्षा मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन, न्यू दिल्ली।
7. सारस्वत मालती, शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा, आलोक प्रकाशन, लखनऊ।
8. गुप्ता, एस.पी., उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
9. सिंह, ए.के. शिक्षा मनोविज्ञान, बनारसीदास पब्लिकेशन, पटना।

10- भटनागर एवं भटनागर, शिक्षा मनोविज्ञान, आर लाल बुक डिपो, मेरठ।

11- Chauhan, S.S.(2002)] Advanced Educational psychology.

12- Clayton, T.E.(1965) Teaching & learning – A psychological perspective, preventive Hall.

13- Grama, R.M.(1985) The congnitive psychology of Scholl learing, Boston: Little, Browman & Co.

14- Chand, Tara, Educational Psychology, Anmol Publication, New Delhi.

15- Chaube, S.P.Educational Psychology & Educational statistics, Lakshmi, Narain Agrawal, Agra.

16- Mangal, S.K., Educational Psychology Tandon Publication, Ludhiana.

17- Pandey, K.P., Modern concepts of Teaching Behaviour, Vishwavidyalaya Prakashan, Varanasi.

18- Mangal S.K., Shiksha Manovigyan, Bentice-Hall of India.

19- Sharma, R.A., Teachnology of Teaching, Meerut International.

20- Mangal, S.K.Essentials of Educational Psychology, Prentice-Hall of India.

तृतीय प्रश्न प्रत्र

कोर्स कोड 103

मूल्यांकन एवं सांख्यिकी

क्रेडिट–4 घण्टे : 60 पूर्णांक–80+20=100

कोर्स लक्ष्य –

1. छात्र शिक्षण मे मूल्यांकन एवं सांख्यिकी के महत्व को समझ सकेंगे।
2. छात्र मापन एवं मूल्यांकन की विधियों से परिचित हो सकेंगे।
3. छात्र मापन एवं मूल्यांकन के उपकरणों का उपयोग कर सकेंगे।
4. छात्र सांख्यिकी के शैक्षिक उपयोग को समझ सकेंगे।

पूर्णांक–80

इकाई–प्रथम

1. मूल्यांकन का अर्थ, परिभाषा, महत्व, प्रकार विशेषतायें।
2. मापन और मूल्यांकन में अन्तर, मापन के स्तर ।
3. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन, सम्प्रत्यय और आवश्यकता।
4. मूल्यांकन के स्वरूप, उद्देश्य, क्षेत्र, एकत्रित सूचना की प्रकृति, गुणात्मक एवं परिमाणात्मक के सन्दर्भ में।

इकाई–द्वितीय

1. मूल्यांकन की प्रविधियॉं, ग्रेडिंग, स्केलिंग, फारमेटिव–समेटिव परीक्षण, मानक सन्दर्भित परीक्षण (NRT) एवं निकष सन्दर्भित परीक्षण (CRT) ।
2. मूल्यांकन में कम्प्यूटर की भूमिका।
3. इकाई परीक्षण, सेमेस्टर पद्धति।

इकाई–तृतीय

1. शैक्षिक सांख्यिकीय का अर्थ, प्रकृति, क्षेत्र।
2. केन्द्रीय प्रवृति के मान, माध्य, मध्यमान, बहुलांक।
3. विचलन मापन, माध्य विचलन, चतुर्थांश विचलन, प्रामाणिक विचलन।

इकाई–चतुर्थ

1. सहसम्बन्ध–अर्थ, प्रकार, अन्तरक्रम विधि।
2. प्रदत्त लेखा चित्रीय प्रदर्शन–आवृत्ति वितरण, दण्ड आरेख, पाई डाईग्राम, आवृत्ति बहुभुज।
3. परीक्षण के प्रकार, लिखित, मौखिक, प्रायोगिक ईकाई परीक्षण, परीक्षण निर्माण के सामान्य सिद्धान्त, एक अच्छे परीक्षण की विशेषतायें।

Vishakh [signature]

आंतरिक आंकलन **पूर्णांक–20**

– आंतरिक आंकलन हेतु एसाइनमेन्ट, परीक्षण, प्रोजेक्ट, प्रस्तुतीकरण, प्रायोगिक कार्य इत्यादि।

सहायक ग्रन्थ –

1. गुप्ता एस.पी. मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पब्लिकेशन, इलाहाबाद।
2. कपिल एच.के.शोध सांखिकी।
3. शर्मा, आर, ए. "सांख्यिकी" आर लाल बुक डिपो, मेरठ।
4. चौधरी कदम– शैक्षणिक मूल्यांकन।
5. Ebel, R.L., Essentials of Educational Measurement, Prentice Hall, New Jersey.
6. Garrett Hennry E-Statistic in Education & psychology.
7. Netco A.j.Educational Assessment of Students Upper Saddle rever, Prentice Halli.
8. Stanley, j.C.and K.D.Hokins, Educational and Psychological measurement and Evaluvation, New Delhi.
9. Green Jorgensem & Gceberich-Measurement & Evaluation in the secondary schools.

चतुर्थ प्रश्न पत्र

कोर्स कोड 104

अधिगम और शिक्षण तकनीकी

क्रेडिट–4 **घण्टे : 60** **पूर्णांक–80+20=100**

कोर्स लक्ष्य –

1. छात्राध्यापक अधिगम के सम्प्रत्यय, सिद्धान्त और कारकों को समझा सकेंगे।
2. संज्ञानात्मक विकास में वैयक्तिक भिन्नता के कारकों की भूमिका को समझ सकेंगे।
3. शिक्षण के सम्प्रत्यय, शिक्षण के स्तर तथा अनुदेशनात्मक विधियों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
4. अभिक्रमित अनुदेशन, प्रतिमान और शिक्षक–व्यवहार के मूल्यांकन की प्रविधियों को ज्ञात कर सकेंगे।

पूर्णांक–80

पाठ्यक्रम

ईकाई–प्रथम

1. अधिगम–सम्प्रत्यय, प्रकृति ,शिक्षण से सम्बंध ,अधिगम के प्रकार, पारिस्थितकीय अधिगम,सहगामी अधिगम।
2. अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक।
3. अधिगम के सिद्धान्त–थार्नडाइक, पैवलय, स्किनर, कोहलर,पियाजे,ब्रुनर,गेने।
4. अधिगम स्थानांतरण–अर्थ, शिक्षा में उपयोगिता।

ईकाई–द्वितीय

1. शिक्षण – अर्थ, परिभाषा, तत्व एवं प्रकार।
2. शिक्षण विधियॉं, शिक्षणशास्त्र, शिक्षण कौशल, शिक्षण तकनीक।
3. शिक्षक केन्द्रित अनुदेशनात्मक गतिविधियॉं – व्याख्यान, प्रदर्शन, दल–शिक्षण।
4- छात्र केन्द्रित अनुदेशनात्मक गतिविधियॉं (अभिक्रमित अनुदेशन) – अर्थ, प्रकार सिद्धान्त [Linear, Branchi & methetics]
5- वैयक्तिक अनुदेशन प्रणाली PSI [Personalized System of Instrution], कम्प्यूटर सह अनुदेशन CAI [Computer Assited Institutions]

ईकाई–तृतीय

1. सूक्ष्म शिक्षण – अर्थ, परिभाषा, इतिहास, अवधारणायें।
2. पाठयोजना – सिद्धान्त और पद्धतियां हरवार्ट, ब्लूम, मारीसन।
3. शिक्षक व्यवहार का मूल्यांकन – फलैण्डर्स।

Vishakha Sha

ईकाई—चतुर्थ

1. शिक्षण के प्रतिमान—अर्थ, अवधारणायें, मूलभूत तत्व, प्रमुख प्रतिमान ब्रूनर सम्प्रत्यय, सम्प्राप्ति प्रतिमान।
2- Online Learning Resources – E journal, E Books.

आंतरिक आंकलन पूर्णांक—20

— आंतरिक आंकलन हेतु एसाइनमेन्ट, परीक्षण, प्रोजेक्ट, प्रस्तुतीकरण, प्रायोगिक कार्य इत्यादि।

सहायक ग्रन्थ

1- भूषण शैलेन्द्र, कुमार अनिल एवं सिंह पूरन पाल, शिक्षण अधिगम के आधारभूत तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
2- माथुर, एस.एस. : शैक्षिक तकनीकी, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
3- कुलश्रेष्ठ, एस.पी.: शैक्षिक तकनीकी के मूलाधार।
4- Pandey, K.P.:Modern Concept of Teaching behavior, Vishv Vidhyaya Prakashan, Varanasi.
5- Mangal, S.K.:Essentials of Educational Techonogy Prentice Hall of India.
6- Hurlock, E.R.:Child development mcgraus-hill book company, znc, New York.
7- Sharma, R.A.: Technology of Teaching Meerut.
8- Sampath, K.L.: Educational Technology, New Delhi.
9- Sharma, R.A.: Technology of Teaching, International Publishing House, Meerut.
10- Mohenty Laxman: ICT Strategies for School.
11- Chavan, Kishore, Information & Communication.

पंचम प्रश्न पत्र
कोर्स कोड 105
अनिवार्य संस्कृत

क्रेडिट–4 घण्टे : 60 पूर्णांक–80+20=100

कोर्स लक्ष्य –

1. छात्राध्यपकों को संस्कृत भाषा के महत्व एंव शिक्षण उद्देश्यों से अवगत कराना।
2. छात्राध्यापकों में संस्कृत कक्षा शिक्षण सम्बन्धी योग्यताओं का विकास करना।
3. छात्राध्यापकों को संस्कृत शिक्षण के लक्ष्यों की सम्प्राप्ति के लिये प्रभावी साधनों विधियों और उपागमों से परिचित कराना।
4. छात्राध्यापकों में संस्कृत के प्रभावी शिक्षण के लिए भाषा कौशल एवं विभिन्न साहित्यिक विधाओं के शिक्षण की क्षमता उत्पन्न करना।
5. छात्राध्यापकों मे सतत एवं प्रभावी मूल्यांकन की क्षमता उत्पन्न करना।

पूर्णांक–80

पाठ्यक्रम

इकाई–प्रथम

1. संस्कृत भाषा का सांस्कृतिक महत्व एवं अन्य भारतीय भाषाओं से सम्बन्ध।
2. संस्कृत भाषा शिक्षण के उद्देश्यों, कक्षा शिक्षण के व्यवहारपरक उद्देश्यों का लेखन।
3. संस्कृत आयोग और त्रिभाषा सूत्र में संस्कृत का स्थान।

इकाई–द्वितीय

1. संस्कृत की प्रकृति एवं भाषागत विशेषताएं – माहेश्वर सूत्र, संस्कृत की ध्वनियों का वर्गीकरण, प्रमुख धातुरूप, शब्द रूप एवं अनुवाद शिक्षण।
2. उच्चारण की शिक्षा, अशुद्ध उच्चारण के प्रकार, उच्चारण दोष के कारण एवं उनके निवारण के उपाय।
3. वर्तनी की शिक्षा एवं महत्व, वर्तनी दोष के कारण एवं निवारण के उपाय।
4. लेखन शिक्षण के सिद्धान्त, विधियां एवं प्रकार, लिखना सिखाने में ध्यान देने योग्य बातें।

इकाई–तृतीय

1. संस्कृत शिक्षण के सामान्य सिद्धान्त और पद्धतियां–प्रत्यक्ष पद्धति, व्याकरण अनुवाद पद्धति, संरचनात्मक, आगमन–निगमन, आधुनिक सम्भाषण विधियां।
2. सूक्ष्म शिक्षण कौशल एवं पाठयोजना (निर्धारित कौशलों पर)।
3. गद्य, पद्य, व्याकरण शिक्षण की विधियां और सोपान।

इकाई–चतुर्थ

1. संस्कृत में मूल्यांकनः प्राचीन और अर्वाचीन विधियां।
2. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की रचना, महत्व एवं प्रकार।
3. दृश्य श्रव्य साधन–वर्गीकरण, प्रयोग, महत्व।

ईकाई–पंचम

1. संस्कृत की पाठ्यपुस्तक–विशेषताएं, निर्माण के सिद्धान्त।
2. संस्कृत अध्यापक के गुण एवं सतत कार्य दक्षता के उपाय।
3. संस्कृत शिक्षण में भाषा–प्रयोगशाला का महत्व।

आंतरिक आंकलन

पूर्णांक–20

– आंतरिक आंकलन हेतु एसाइनमेन्ट, परीक्षण, प्रोजेक्ट, प्रस्तुतीकरण, प्रायोगिक कार्य इत्यादि।

सहायक ग्रन्थ –

1. पाण्डेय, रामशकल, संस्कृत शिक्षण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
2. मित्तल, संतोष, संस्कृत शिक्षण, आर.एल.बुक डिपो मेरठ 2007।
3. तिवारी भोलानाथ, भाषा विज्ञान, किताब महल, इलाहाबाद 1974।
4. द्विवेदी कपिल देव, रचनानुवाद कौमुदी, आर.बी.प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. कीथ, ए.बी.:संस्कृत साहित्य का इतिहास।
6. उपाध्याय, बलदेव भारतीय साहित्य का अनुशीलन, शारदा मन्दिर, काशी।
7. मिश्र, लोकमान्य, साहित्य शिक्षण विधि, राजस्थान, ग्रंथागार, जोधपुर।

Vishakha Jha

षष्ठ प्रश्न पत्र

कोर्स कोड 106 (क)

हिन्दी विषय बोध एवं शिक्षण विधि (वैकल्पिक)

क्रेडिट–4 घण्टे : 60 पूर्णांक–80+20=100

कोर्स लक्ष्य –

1. भावी शिक्षकों में हिन्दी शिक्षण के लिये भाषा सम्बन्धी आधारभूत योग्यताओं का विकास करना।
2. भावी शिक्षकों में आधुनिक शिक्षण विधियों व तकनीकों का हिन्दी शिक्षण में उचित रूप मे प्रयोग करने की क्षमता का विकास करना।
3. सहायक सामग्री के निर्माण एवं प्रयोग की कुशलता का विकास करना।
4. भावी शिक्षकों मे भाषा कौशलों एवं हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं के शिक्षण की क्षमता का विकास करना।

पूर्णांक–80

पाठ्यक्रम

इकाई – प्रथम

1. हिन्दी भाषा का महत्व – मातृ भाषा एवं राष्ट्रीय भाषा के रूप में।
2. आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास में हिन्दी का स्थान और अन्य भाषाओं से सम्बन्ध।
3. हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य एवं पाठ्यक्रम में स्थान।
4. कक्षा शिक्षण के व्यवहार परक उद्देश्यों का लेखन।

इकाई–द्वितीय

1. हिन्दी ध्वनियों का वर्गीकरण, वर्णमाला, स्वर, व्यंजन और मात्रायें/देवनागरी लिपि।
2. मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ, वर्तनी का महत्व एवं प्रकार। वर्तनी एवं वाचन शिक्षण के दोष एवं निवारण के उपाय।

इकाई–तृतीय

1. सूक्ष्म शिक्षण स्वरूप–कौशल एवं पाठयोजना, प्रस्तावना कौशल, प्रश्न कौशल, दृष्टान्त कौशल, पुनर्बलन कौशल, श्यामपट्ट कौशल, व्याख्या एवं समापन कौशल।
2. पाठयोजना–सिद्धान्त, प्रकार एवं सोपान।
3. दृश्य श्रव्य साधन–प्रयोग एवं महत्व।

इकाई–चतुर्थ

1. भाषा शिक्षण के सामान्य सिद्धान्त और पद्धतियाँ।
2. गद्य शिक्षण–उद्देश्य, सोपान व विधियाँ।
3. पद्य शिक्षण–उद्देश्य, सोपान व विधियाँ।
4. रचना शिक्षण–महत्व, उद्देश्य व विधियाँ।

इकाई–पंचम

1. हिन्दी में मूल्यांकन – अभिप्राय, महत्व एवं प्रकार।
2. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की रचना, महत्व एवं प्रकार।
3. हिन्दी की पाठ्य पुस्तक–विशेषताएं एवं निर्माण के महत्व।
4. हिन्दी अध्यापक के गुण एवं सतत् कार्यक्षमता वृद्धि के उपाय।

आंतरिक आंकलन

पूर्णांक–20

– आंतरिक आंकलन हेतु एसाइनमेन्ट, परीक्षण, प्रोजेक्ट, प्रस्तुतीकरण, प्रायोगिक कार्य इत्यादि।

पुस्तक–

1. गुप्ता, मनोरमा–भाषा शिक्षण सिद्धान्त और प्रविधि।
2. वर्मा, रामचन्द्र–हिन्दी प्रयोग।
3. पाण्डेय, रामसकल–हिन्दी शिक्षण।
4. सफाया, रघुनाथ – हिन्दी शिक्षण विधि।
5. शर्मा लक्ष्मीनारायण – भाषा1 एवं 2 की शिक्षण विधियां।
6. मंगल, उमा–हिन्दी शिक्षण, नई दिल्ली आर्य बुक डिपो।
7. रमन बिहारी लाल (1997) हिन्दी शिक्षण मेरठ, रस्तोगी।
8. क्षत्रिय के.(1968) – मातृ भाशा शिक्षण, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।

Vishelch Shil

English- Understanding

Course Code-106 (ख)

Teaching Methodology (Optional)

Credit-04 Hours:60 M-M.80+20=100

Course Objectives :-

1- To enable student- teachers to teach basic language skills as listening, speaking, reading and writing.
2- To enable them to evaluate teaching skills through modern evaluation techniques.
3- To develop interest in English Literature.

M.M.-80

Unit-I

1- Need and importance of English language teaching in school curriculum.
2- Functional, cultural, and literacy roles of English.
3- Aims of English teaching, writing of behavioral aims of classroom teacher with special reference of bloom's taxonomy.
4- Relation with other school subjects.

Unit-II

1- Content and objectives of teaching- learning of English as a first language and second language.
2- Problems in effective teaching of English as a second language in Indian Schools and their possible solutions.

Unit-III

1- Special methods of teaching English and steps of lesson-planning.
2- Methods of teaching, reading Alphabet, Phonic word method, Phrase method, Sentence Method, Intensive and extensive reading.
3- Methods of teaching, writing, drill and practice, spelling and punctuations, creative writing.
4- Objectives and steps of micro and macro lesson planning- Prose, Poetry, Grammar and composition.

Unit-IV

1- Need and importance of Audio-Visual Aids in English Teaching.
2- Preparation and classification of Audio-Visual Aids.
3- Language Laboratory.

Unit-V

1- Evaluation in English.
2- Types of Evaluation- Diagnostic Testing, Remedial Teaching. Unit Test, Comprehensive test.
3- Qualities and Resposibilities of good English Teacher.

Reference Books:-

1- Bhandari and other: Teaching of English.
2- Gurrey, P.Teaching English as a Foreign Language.
3- Yhamas & Wyatt: The teaching of English in India.
4- Menon, T.Kin and Patel, M.S.- The Teaching of English, Acharya Book, Depot, Baroda.
5- Sharma, P.(2011), Teaching of Skills, Teaching and Methods, Delhi, Shipra Publication.
6- Bist, Abha Rani, Teaching of English in India, Vinod Pustak Mandir, Agra.
7- Bandari, C.S. and others (1966) Teaching of English:- A Hand Book for Teachers, New Delhi.
8- Bhatia, K.K.(2006), Teaching and learning English as a foregn language, Ludhiana.

[illegible] प्रश्न पत्र

[illegible]

इतिहास विषय बोध एवं शिक्षण विधि (वैकल्पिक)

क्रेडिट – 4 समय : [illegible] पूर्णांक [illegible]

उद्देश्य –

1. छात्राध्यापकों को इतिहास शिक्षण के महत्व एवं उद्देश्य से अवगत कराना।
2. छात्राध्यापकों को इतिहास शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रभावी शिक्षण विधियों, तकनीकों और उपागमों से परिचित कराना।
3. राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय एकता की भावना के विकास में इतिहास की भूमिका से अवगत कराना।
4. इतिहास शिक्षण हेतु सहायक सामग्री के निर्माण और उपयोग की क्षमता का विकास करना।
5. इतिहास शिक्षण में रुचि उत्पन्न करना।

पूर्णांक–[illegible]

पाठ्यक्रम

इकाई–प्रथम

1. विद्यालयी विषय के रूप में इतिहास शिक्षण की उपयोगिता।
2. इतिहास शिक्षण के उद्देश्य, कक्षा शिक्षण के व्यवहारगत उद्देश्यों का उल्लेखन।
3. अन्य विद्यालयी विषयों से इतिहास का सम्बन्ध।

इकाई–द्वितीय

1. इतिहास–अर्थ, क्षेत्र एवं प्रकृति–माध्यमिक विद्यालयी पाठ्यक्रमानुसार।
2. भारतीय इतिहास–संक्षिप्त परिचय।
3. विश्व इतिहास–माध्यमिक विद्यालयी पाठ्यक्रमानुसार।

इकाई–तृतीय

1. इतिहास शिक्षण के सिद्धान्त एवं विधियाँ– व्याख्यान विधि, कहानी कथन विधि, स्रोत विधि, विचार–विमर्श विधि।
2. इतिहास की पाठयोजना: आवश्यकता, महत्व एवं सोपान–सूक्ष्म एवं [illegible]।
3. इतिहास शिक्षण की युक्तियाँ एवं तकनीकें।

इकाई–चतुर्थ

1. इतिहास के पाठ्यक्रम के उपागम एवं सिद्धान्त तथा सावधानियाँ।
2. इतिहास की पाठ्यपुस्तक–अर्थ, आवश्यकता एवं पाठ्यपुस्तक की रचना के सिद्धान्त।
3. दृश्य श्रव्य साधन–प्रयोग एवं महत्व।

इकाई–पंचम

1. इतिहास में मूल्यांकन–अर्थ एवं प्रकार।
2. इतिहास शिक्षक के गुण एवं सतत् कार्यदक्षता वृद्धि के उपाय।

आंतरिक आंकलन

पूर्णांक–20

– आंतरिक आंकलन हेतु एसाइनमेन्ट, परीक्षण, प्रोजेक्ट, प्रस्तुतीकरण, प्रायोगिक कार्य इत्यादि।

पुस्तक

1. पाण्डेय, पी.एन.–टिचिंग ऑफ हिस्ट्री।
2. त्यागी, गुरूसरन–इतिहास शिक्षण।
3. घाटे–सजेशन फॉर टीचिंग आफ हिस्ट्री इन इंडिया।

4- Agrawal, J.C.:Teaching of History, New Delhi, Vikas publishing House Pvt.Ltd.

5- Chaudhary K.P.:The Effective Teaching of History, in India, New Delhi, NCERT.

6- Kochar, S.K.:The Teaching of History, Delhi, Sterling publishers.

7- Singh, R.P.:Teaching of History, Meerut, Surya Pub.

8- Tyagi, G.: Teaching of History, Agara, Vinod Pustak Mandir.

Vikas

षष्ठ प्रश्न पत्र

कोर्स कोड 106 (घ)

भूगोल विषय बोध एवं शिक्षण विधि (वैकल्पिक)

क्रेडिट–4 **घण्टे : 60** **पूर्णांक–80+20=100**

कोर्स लक्ष्य –

1. भावी शिक्षकों में भूगोल शिक्षण के महत्व एवं आवश्यकता के विषय में बोध विकसित करना।
2. भूगोल शिक्षण के सामान्य–विशिष्ट उद्देश्यों के विषय में समझ विकसित करना।
3. भूगोल शिक्षण की विभिन्न विधियों से परिचित कराना और उनके उपयोग की क्षमता उत्पन्न करना।
4. क्षेत्रीय भूगोल एवं विश्व भूगोल के बारे में समझ विकसित करना।
5. संश्लेषण– विश्लेषण, तर्क, निर्णय की क्षमताओं का विकास करना।
6. सहायक सामग्री के निर्माण और उपयोग की क्षमता का विकास करना।

पूर्णांक–80

पाठ्यक्रम

इकाई–प्रथम

1. विद्यालयी विषय के रूप में भूगोल शिक्षण की उपयोगिता एवं महत्व।
2. भूगोल शिक्षण के उद्देश्य, कक्षा शिक्षण के व्यवहारपरक उद्देश्यों का लेखन।
3. अन्य विद्यालयी विषयों से भूगोल का सम्बन्ध– इतिहास, नागरिकशास्त्र, गणित, विज्ञान, भाषायें आदि।

इकाई–द्वितीय

1. भूगोलः– अर्थ, प्रकृति और क्षेत्र।
2. भारतीय उपमहाद्वीप एवं विश्व भूगोल का सामान्य परिचय (माध्यमिक विद्यालयी पाठ्यपुस्तक आधारित) तात्कालिक भौगोलिक घटनाएं।
3. राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण के विकास में भूगोल की भूमिका।

इकाई–तृतीय

1. भूगोल शिक्षण के सिद्धान्त एवं विधियाँ – व्याख्यान, विचार–विमर्श, योजना पद्धति, भ्रमण एवं प्रयोगशाला पद्धति।
2. उपर्युक्त शिक्षण विधियों के चुनाव का आधार।
3. भूगोल शिक्षण पाठयोजना की आवश्यकता, महत्व एवं सोपान – सूक्ष्म एवं वृहत्।
4. युक्तियां एवं शिक्षण सूत्र।

इकाई–चतुर्थ

1. दृश्य श्रव्य साधन–प्रयोग एवं महत्व।
2. भूगोल की पाठ्यपुस्तकें, पाठ्यपुस्तक समालोचना के आधार।
3. भूगोल शिक्षण में पुस्तकालय एवं संदर्भ पुस्तकों की उपयोगिता।
4. भूगोल कक्ष की सज्जा, आवश्यकता एवं महत्व।

इकाई–पंचम

1. भूगोल में मूल्यांकनः अर्थ एवं प्रकार।
2. प्रश्न पत्र निर्माणः आदर्श प्रश्न पत्र निर्माण के सिद्धान्त।
3. परीक्षण की विधियां एवं तकनीकें, इकाई परीक्षण।
4. आदर्श शिक्षक के गुण एवं सतत् कार्य दक्षता के उपाय।

आंतरिक आंकलन

पूर्णांक–20

– आंतरिक आंकलन हेतु एसाइनमेन्ट, परीक्षण, प्रोजेक्ट, प्रस्तुतीकरण, प्रायोगिक कार्य इत्यादि।

सहायक ग्रन्थ–

1. वर्मा, जे.पी.भूगोल– अध्ययन, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
2. आत्मानन्द मिश्र, भूगोल शिक्षण पद्धति।
3. गुरू प्रसाद टण्डन, भूगोल शिक्षण कला।
4. एच.एन.सिंह, भूगोल शिक्षण।
5. Jaida, S.M.Modern Teaching of Geography, New Delhi Sterting Pub.
6. O.P.Verma Geography Teaching.
7. Ch.Orely, R.J.Frontiers in Geography Teaching Agra Sahitya Prakashan.
8. Srivastav, Karnti Mohan: Geography, Teaching, Agra Sahitya Prakashan.
9. Agrawal, K.L.-Teaching of Geography, Ludhiyana Hindi Prakashan.
10. Broadman David-Frontiers in Geography Teaching, Fehua Press, Landon Philodhipha.

षष्ठ प्रश्न पत्र

कोर्स कोड 106 (ङ)

नागरिकशास्त्र विषय बोध एवं शिक्षण विधि (वैकल्पिक)

क्रेडिट–4 **घण्टे : 60** **पूर्णांक–80+20=100**

कोर्स लक्ष्य –

1. नागरिकशास्त्र शिक्षण के महत्व के विषय में बोध विकसित करना।
2. नगरिकशास्त्र शिक्षण के सामान्य और विशिश्ट उद्देश्यों के विषय में समझ विकसित करना।
3. नगरिकशास्त्र शिक्षण के विधि तंत्र से परिचित कराना और उसमें उपयोग क्षमता विकसित करना।
4. राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय नागरिकता के बारे में समझ विकसित करना।
5. सहायक सामग्रियों के निर्माण और उपयोग की क्षमता का विकास करना।

पूर्णांक–80

पाठ्यक्रम

इकाई–प्रथम

1. विद्यालयी विषय के रूप में नागरिकशास्त्र शिक्षण की उपयोगिता एवं महत्व।
2. नागरिकशास्त्र शिक्षण के उद्देश्य, कक्षा शिक्षण के व्यवहारपरक उद्देश्यों का लेखन।
3. अन्य विद्यालयी विषयों के साथ सम्बन्ध।

इकाई–द्वितीय

1. नागरिक और नागरिकता:– अर्थ, प्रकृति, अधिकार और कर्तव्य।
2. मनुष्य की आवश्यकतायें और सामाजिक संस्थानों पर निर्भरता।
3. राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में नागरिक की भूमिका।

इकाई–तृतीय

1. नागरिकशास्त्र शिक्षण की पाठयोजना के सोपान एवं विधियां।
2. सूक्ष्म पाठयोजना (निर्धारित कौशलों पर)।
3. वृहत् पाठयोजना के आधुनिक सोपान।
4. विधियां– व्याख्यान, विचार–विमर्श, योजना, सर्वेक्षण।
5. युक्तियां एवं तकनीकें– संगोष्ठी, कार्यशाला, दत्तकार्य, व्यक्ति अध्ययन, भ्रमण।

इकाई–चतुर्थ

1. नगरिकशास्त्र शिक्षण मे सहायक सामग्रियों के निर्माण एवं उपयोग का महत्व।
2. पाठ्यपुस्तक की विशेषतायें।
3. आदर्श नागरिकशास्त्र शिक्षक के गुण एवं सतत् कार्य दक्षता के उपाय।

इकाई–पंचम

1. नागरिकशास्त्र में मूल्यांकन।
2. परीक्षण की विधियां एवं आधुनिक तकनीकें, इकाई परीक्षण।

आंतरिक आंकलन

पूर्णांक–20

– आंतरिक आंकलन हेतु एसाइनमेन्ट, परीक्षण, प्रोजेक्ट, प्रस्तुतीकरण, प्रायोगिक कार्य इत्यादि।

सहायक ग्रन्थ–

1. त्यागी, गुरूशरण दास–नागरिकशास्त्र का शिक्षण।
2. Harlikar- Teaching of Civics in India.
3. Agrwal, J.C.-Teaching of Political Sciences & Civics, New Delhi, Vikas Pub.
4. Shaida B.D.-Teaching of Political Sciences, Jalandhar, Panjab Kitab Ghar.
5. Syed, M.H.-Modern Teaching of Civics, New Delhi, Anmol Publication, Pvt.Ltd.

षष्ठ प्रश्न पत्र

कोर्स कोड 106 (च)

अर्थशास्त्र विषय बोध एवं शिक्षण विधि (वैकल्पिक)

क्रेडिट–4 **घण्टे : 60** **पूर्णांक–80+20=100**

कोर्स लक्ष्य –

1. अर्थशास्त्र शिक्षण के अर्थ, आवश्यकता एवं महत्व के विषय मे बोध विकसित करना।
2. अर्थशास्त्र शिक्षण के सामान्य एवं विशिष्ट उद्देश्यों के प्रति समझ विकसित करना।
3. राष्ट्र की आर्थिक समस्याओं के प्रति उचित दृष्टिकोण का विकास करना।
4. अर्थशास्त्र शिक्षण की विधियों एवं मूल्यांकन प्रविधियों से परिचित कराना।
5. अर्थशास्त्र शिक्षण के प्रति रूचि उत्पन्न करना।

पूर्णांक–80

पाठ्यक्रम

इकाई–प्रथम

1. विद्यालयी विषय के रूप में अर्थशास्त्र शिक्षण की उपयोगिता।
2. अर्थशास्त्र शिक्षण के उद्देश्य, कक्षा शिक्षण के व्यवहारपरक उद्देश्यों का लेखन।
3. अर्थशास्त्र का अन्य विद्यालयी विषयों के साथ सहसम्बन्ध।

इकाई–द्वितीय

1. अर्थशास्त्रः– अर्थ, प्रकृति, अधिकार और कर्त्तव्य।
2. भारतीय आर्थिक परिदृश्य के प्रमुख पक्ष एवं समस्याएं–
   मुद्रास्फीति, गरीबी, बेरोजगारी, निजीकरण एवं उदारीकरण की अवधारणा।

इकाई–तृतीय

1. अर्थशास्त्र की शिक्षण विधियां– व्याख्यान विधि, विचार विमर्श विधि, योजना विधि, सर्वेक्षण, संश्लेषण–विश्लेषण विधि।
2. पाठयोजना–आवश्यकता, सिद्धान्त एवं सोपान–सूक्ष्म एवं वृहत्।
3. अर्थशास्त्र शिक्षण की युक्तियां एवं तकनीकें–
   दत्तकार्य, संगोष्ठी, कार्यशाला, व्यक्ति अध्ययन, भ्रमण।

इकाई–चतुर्थ

1. अर्थशास्त्र शिक्षण में सहायक सामग्रियों के निर्माण एवं उपयोग का महत्व।
2. अर्थशास्त्र की पाठ्यपुस्तक की विशेषतायें।
3. आदर्श अर्थशास्त्र शिक्षक के गुण एवं सतत् कार्यदक्षता के उपाय।
4. अर्थशास्त्र में मूल्यांकन– परीक्षण की विधियां एवं आधुनिक तकनीकें, इकाई परीक्षण।

Vishal Singh

इकाई पंचम-

अर्थशास्त्र के निम्नलिखित शब्दों का संक्षिप्त परिचय-

1. W.T.O. (World Trade Organization)

2. [illegible]

3. [illegible]

[illegible]

[illegible]

- [illegible]

सहायक ग्रंथ-

1. [illegible] - अर्थशास्त्र [illegible]
2. [illegible] - अर्थशास्त्र [illegible]
3. [illegible] - अर्थशास्त्र [illegible]
4. [illegible] - अर्थशास्त्र [illegible]
5. [illegible] - अर्थशास्त्र [illegible]
6. [illegible] - अर्थशास्त्र [illegible]
7. Agrawal, A.N. & Kundan Lal - Economics of Development & Planning, New Delhi, Vikash Publishing House.
8. Dwivedi D.N. - Principal of Economics, New Delhi, Vikas Pub.
9. Chopra, P.N. - Micro Economics, Kalyani Publisher.
10. Mishra, S.Puri- Indian Economy, New Delhi, Radha Pub.
11. Hanna, R.A. - Arthashastra Shiksha, Agra Gyan Prashad & Sons.

V.[illegible]

व्यावसायिक क्षमता अभिवर्द्धक कोर्स EPC

प्रत्येक शिक्षक को व्यावसायिक कार्यदक्षता की अभिवृद्धि हेतु शिक्षा सिद्धान्तों, शिक्षण विधियों–प्रविधियों एवं नवाचारों के ज्ञान के साथ–साथ अपनी संस्कृति परिवेश एवं सूचना एवं संचार तकनीकी के शैक्षिक उपयोग में कुशल होना चाहिए, तभी वह बदलते हुए शैक्षिक परिदृश्य मे सतत कार्य–दक्षता के व्यावसायिक लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है, इस उद्देश्य से शिक्षाशास्त्री के नवीन पाठ्यक्रम के प्रत्येक वर्ष में कुछ सहायक कोर्स रखे गये है –

EPC 1

स्वाध्याय एवं अभिव्यक्ति
(Reading and reflection on texts)

सहायक पाठ्यक्रम के उद्देश्य –

1. स्तरीय ग्रन्थों को खोजने उनका गहन अध्ययन करने और उनमें उपयोगी तथ्यों के अन्वेषण की प्रवृति का विकास करना।
2. ग्रन्थों में वर्णित विचारों घटनाओं, उक्तियों की सटीक और संतुलित व्याख्या की प्रवृति का विकास करना।
3. ग्रन्थोक्त विचारों का सारांश लिखना।
4. ग्रन्थोक्त विचारों का उपयोग लिखित एवं मौखिक अभिव्यक्तियों में करने की क्षमता का विकास करना।

पाठ्यक्रम की रूपरेखा –

1. वर्तमान राजनीतिक–सामाजिक समस्याओं पर लिखी गयी पुस्तकों का अध्ययन करना।
2. आत्मकथाओं और विचारपरक ग्रन्थों का अध्ययन।
3. श्री अरविन्द, स्वामी विवेकानन्द, गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा गाँधी आदि भारतीय महापुरूषों के शैक्षिक चिन्तन परक ग्रन्थों का अध्ययन समालोचना।
4. प्राचीन और अर्वाचीन साहित्यिक कृतियों का समालोचनात्मक अध्ययन।
5. विभिन्न शास्त्रीय ग्रन्थों का अध्ययन समालोचना एवं अभिव्यक्ति।

सहायक ग्रन्थ –

विविध विषयों पर लिखे गयो मूल चिन्तन परक ग्रन्थों का अध्ययन ही इस कोर्स का लक्ष्य है। उदाहरणार्थ कुछ ग्रन्थ यहाँ दिये जा रहे हैं।

1. भरतमुनि नाट्य शास्त्र
2. संस्कृत एवं अन्य भारतीय भाषाओं का साहित्य।
3. प्राच्य साहित्य शास्त्र पर लिखे गये ग्रन्थ
4. महाकवि कालिदास की कृतियां
5. मुंशी प्रेमचन्द्र के उपन्यास
6. महात्मा गाँधी की आत्मकथा
7. जे. कृष्णमूर्ति के व्याख्यान संकलन

8- **Cultral Heritage of India-Dr.S.Radha Krishanan**

9- **Abraham Lincon's-Letter to his son's Teachers.**

Vishakha Sha

EPC 2

सूचना एंव संचार तकनीकी (I C T) का व्यावहारिक प्रयोग

भावी शिक्षकों में सूचना एवं संचार तकनीकी के उपयोग क्षमता का विकास करना इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु कम्प्युटर एवं इंटरनेट की कार्यप्रणाली का सामान्य ज्ञान एवं व्यवसायिक उपयोग करने हेतु शैक्षिक गतिविधियां आयोजित करना।

इकाई–1

1. रेडियों और कैसेट्स का उपयोग।
2. दूरदर्शन और विडियोज का उपयोग।
3. पत्र–पत्रिकाओं का उपयोग।

इकाई–2

1. कम्प्यूटर संचालन का व्यावसायिक ज्ञान। Word Processing, Power Point Excel Etc.
2. Effective Browsing of the Internet, Survey of Educational sites.
3. Downloding of Relevant Material.

EPC 3

नाट्य संगीत कला एवं शारीरिक शिक्षा
(Drama, Music Art and Physical Education)

उद्देश्य –

1. छात्राध्यापकों को प्राचीन एवं अर्वाचीन नाट्य संगीत एवं अन्य दृष्य कलाओं से परिचित कराना।
2. उनमें कलात्मक बोध का विकास करना और विद्यालयी शिक्षा कला को माध्यम के रूप में उपयोग की क्षमता का विकास करना।

पाठ्यक्रम की रूपरेखा –

1. पेन्सिल रंग, रंगोली, मिट्टी का उपयोग करके विभिन्न कलात्मक की रचना एवं शिक्षा में उपयोग।
2. भारतीय संगीत, नृत्य एवं नाटकों के विशय में ज्ञानवर्द्धन एवं मंचन।
3. विभिन्न खेलों का आयोजन एवं परिमाप व सम्बन्धित शब्दावली इत्यादि।

मूल्यांकन –

उपयुक्त व्यावसायिक क्षमता अभिवर्द्धक सहायक पाठ्यक्रमों का मूल्यांकन अधोलिखित गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता एवं प्रदत्त दक्षकार्य के आधार पर किया जायेगा।

1. विचार–विमर्श, भाशण एवं वाद–विवाद प्रतियोगितायें।
2. आरेख, रेखाचित्र, वित्र पोस्टर निर्माण द्वारा।
3. प्रार्थना सभा में विचार प्रस्तुतीकरण।
4. नोटिस बोर्ड पर विचारों का लेखन।
5. पावर पाइंट प्रस्तुति।
6. Educational Sites का उपयोग।
7. संगीत नाट्य का मंचन।
8. विद्यालयी छात्रों का सांस्कृति कार्यक्रमों, खेलों, योग स्वास्थ्य एवं सामुदायिक गतिविधयों में नेतृत्व।

द्वितीय वर्ष
प्रथम प्रश्न पत्र
कोर्स कोड 201
शैक्षिक प्रशासन, विद्यालय प्रबन्धन एवं स्वास्थ्य शिक्षा

क्रेडिट–4

घण्टे : 60 **पूर्णांक–80+20=100**

कोर्स लक्ष्य –

1. छात्र शैक्षिक प्रशासन के अर्थ महत्व एवं कार्यक्षेत्र के बारे में जान सकेंगे।
2. भारत में शैक्षिक प्रशासन के विभिन्न अभिकरणों और उनके कार्यों को समझ सकेंगे।
3. आदर्श विद्यालय भवन, खेल के मैदान एवं पुस्तकालय के स्वरूप को जान सकेंगे।
4. विद्यालय प्रबन्धन के विभिन्न तत्वों एवं मानवीय सम्बन्धों का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
5. छात्र स्वास्थ्य शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व एवं प्रकृति को जान सकेंगे।

ईकाई–प्रथम **पूर्णांक–80**

1. शैक्षिक प्रशासन का अर्थ, परिभाषा, क्षेत्र, सिद्धान्त एवं प्रकार, भारत में शैक्षिक प्रशासन अभिकरण–केन्द्रीय, राज्य एवं स्थानीय निकाय।

इकाई–द्वितीय

1. विद्यालय भवन तथा उपकरण–कक्षाकक्ष, क्रीड़ांगण, प्रयोगशाला, पुस्तकालय।
2. समय–सारणी निर्माण के सिद्धान्त, पाठ्यसहगामी क्रियाएं–वाद विवाद संगोष्ठी, खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रम, युवा महोत्सव एवं नेतृत्व क्षमता।

इकाई–तृतीय

1. प्रधानाध्यापक के कर्तव्य, उत्तरदायित्व एवं नेतृत्व क्षमता, शिक्षकों एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों से सम्बन्ध, अभिभावक सभा।
2. विद्यालय अभिलेख–उपयोगिता, प्रकार एवं रख–रखाव।

इकाई–चतुर्थ

स्वास्थ्य शिक्षा का अर्थ, परिभाषा, उद्देश्य एवं महत्व।

1. मनुष्य जीवन में स्वास्थ्य एवं स्वच्छता का महत्व, स्वास्थ्य सम्बन्धी सामान्य ज्ञान और अच्छी आदतें।
2. शारीरिक मानसिक अस्वस्थता से बचने के उपाय, तनाव।
3. जन स्वास्थ्य सेवायें और विद्यालय।

आंतरिक आंकलन

पूर्णांक–20

– आंतरिक आंकलन हेतु एसाइनमेन्ट, परीक्षण, प्रोजेक्ट, प्रस्तुतीकरण, प्रायोगिक कार्य इत्यादि

Vilhalsh

सहायक ग्रन्थ –

१. अग्रवाल जे.सी., स्कूल एडमिनिस्ट्रेशन, दिल्ली।
२. सक्सेना जे.सी. पर्यावरण एवं पर्यवेक्षण, मध्यप्रदेश ग्रन्थ एकेडमी।
३. मेहता डी. शैक्षिक प्रबन्ध न्यू दिल्ली।
४. भटनागर आर.एन., School Administration and Organisation धनपतराय एण्ड संस दिल्ली।
५. मेहता डी.एस. Publication Education School Curriculam.
६. Population Education for Teacher NCERT-1974.

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

१. शैली, एस.पी., स्वास्थ्य शिक्षा, कैलाश प्रिन्टिंग प्रेस, आगरा।
२. भोग, जे.पी.सि. स्वास्थ्य शिक्षा 2009 अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा।
३. नायर, भा.गो. – शैक्षणिक संघटन, प्रशासन व प्रश्न, हीनस प्रकाशन पुणे।
४. पारसनीस, डा. हेमलता एवं घुनावे अरविन्द – शैक्षणिक प्रशासन व व्यवस्थापन, नूतन प्रकाशन पुणे।
५. Sukhiya, S.P.: Educational Administration and Health Education Jyoti Printing Agra.
६. Agrawal, J.C. School Organization, Administration & Management, Boaba House, Delhi.
७. Mathura, S.S., Educational Administration & Management, the Indian Publications Ambala Cantt.
८. Rai, B.c. School organization & management, Prakashan Kendra, Lucknow.
९. Bhat, K.S.& Ravishankar, S., Administration of Education, Seema Publication, Delhi.
10. Singh, Ajmer, Essentials of physical Education, Ludhiana : Kalyani Publishers.
11. Uppal, A.K.& Gautam, G.P.Physical Education & Health, Delhi, Friends Publisher.

Vishal Sh

द्वितीय प्रश्न पत्र

कोर्स कोड 202

ज्ञान, पाठ्यक्रम एवं मूल्याधारित शिक्षा

क्रेडिट–4

घण्टे : 60 पूर्णांक–80+20=100

कोर्स लक्ष्य –

1. छात्राध्यापक ज्ञान और ज्ञान ग्रहण की प्रक्रिया को समझ सकेंगे।
2. छात्राध्यापक ज्ञान प्राप्ति की विधियों से अवगत होगा।
3. छात्राध्यापक पाठ्यक्रम संरचना के सिद्धान्त विधियों और उपागमों से परिचित होगे।
4. विचार और व्यवहार की सकारात्मक आदतें विकसित कर सकेंगे।
5. छात्राध्यापक नैतिक और मानवीय मूल्यों के वैचारिक आधार को समझ सकेंगे।

इकाई–प्रथम पूर्णांक–80

1. ज्ञान क्या है। पाश्चात्य एवं भारतीय दृष्टिकोण–अर्थ।
2. सत्य ज्ञान प्राप्त करने के परम्परागत साधन, प्रत्यक्ष अनुमान और प्राप्त प्रमाण।
3. ज्ञान के प्रकार–स्थानीय, सार्वभौमिक, सूक्ष्म–स्थूल सैद्धान्तिक व्यावहारिक।
4. ज्ञान, सूचना, विश्वास और सत्य में अन्तर।

इकाई–द्वितीय

1. पाठ्यक्रम – अर्थ, महत्व एवं संरचना।
2. पाठ्यक्रम, पाठ्यचर्या और पाठ्येतर क्रियाओं में अन्तर।
3. पाठ्यक्रम विकास के दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक आधार।
4. पाठ्यक्रम विकास के उपागम, बालकेन्द्रित, विषय केन्द्रित, क्रिया–केन्द्रित।
5. पाठ्यक्रम के अन्तर्विषयी उपागम, सामाजिक विषयों का पारस्परिक सम्बन्ध, संस्कृत एवं भारतीय भाषाओं का सम्बन्ध।

इकाई–तृतीय

1. मूल्य–अर्थ, प्रकार और महत्व।
2. मूल्य शिक्षा के उपागम, दार्शनिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक विकास।
3. मूल्य आधारित शिक्षा सम्प्रत्यय और प्रविधियां।
   - I. स्वीकृत अध्ययन विधि।
   - II. अभिवृत्यात्मक विकास विधि।
4. समकालीन विश्व के समक्ष मूल्यों की चुनौतियां।

इकाई–चतुर्थ

जीवन मूल्य एवं समग्र जीवन दृष्टि–

1. मानव जीवन, उसका महत्व और उसके लक्ष्य (वैदिक, जैन, बौद्ध जीवन आदर्श एवं आधुनिक विचार)।
2. सुखी, सफल, सार्थक जीवन की आवधारणा।
3. जीवन के विविध पक्ष और उनकी मूल्य मर्यादाएं आंतरिक व्यक्तित्व एवं बाहरी जीवन।
4. आधुनिक सामाज व्यवस्था के मूल्यः लोकतंत्र, समता और सामाजिक न्याय।
5. व्यक्तिगत स्वतन्त्रता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व।

आंतरिक आंकलन

पूर्णांक–20

– आंतरिक आंकलन हेतु एसाइनमेन्ट, परीक्षण, प्रोजेक्ट, प्रस्तुतीकरण, प्रायोगिक कार्य इत्यादि।

सहायक ग्रन्थ –

1. पांडेय रामसकल एवं मिश्र करूणाशंकर, मूल्य शिक्षण विनोद पुस्तक मन्दिर, 2005।
2. त्रिपाठी अजितनारायणः सुखीः, सफल और सार्थक जीवन के लिए नैतिक और माननीय मूल्य; प्रतिभूति प्रकाशन, कोलकता।
3. Agrawal J.C., Handbook of Curriculum and Instruction Doaba Book House, New Delhi.
4. Carson R.N. a taxonomy of knowledge type for use in curriculum.
5. Brruner's (1996) The process of Education Harsqard Uni.Press.
6. NCERT(2005) National Curriculum Fram work New Delhi.
7. Dewey, John (1966) The child and the curriculum, The University fo Chicago Press.

तृतीय प्रश्न पत्र

कोर्स कोड 203

माध्यमिक शिक्षा का स्वरूप एवं समावेशी शिक्षा

क्रेडिट–4

घण्टे : 60 **पूर्णांक–80+20=100**

कोर्स लक्ष्य –

1. छात्राध्यापक भारत में माध्यमिक शिक्षा के स्वरूप एवं प्रकारों के विशय में जान सकेंगे।
2. छात्राध्यापक माध्यमिक शिक्षा से सम्बन्धित शिक्षा नीतियों एवं आयोगों के सुझावों से अवगत होंगे।
3. छात्राध्यापक माध्यमिक शिक्षा की समस्याओं से अवगत होंगे।
4. समावेशी शिक्षा की अवधारणा एवं महत्व से अवगत होंगे।
5. समावेशी विद्यालय की प्रकृति एवं स्वरूप से अवगत होंगे।

पूर्णांक–80

इकाई–प्रथम

1. भारत में माध्यमिक शिक्षा का स्वरूप एंव स्थिति तथा प्राथमिक शिक्षा से उसका सम्बन्ध।
2. माध्यमिक शिक्षा : अभिप्राय उद्देश्य एवं क्षेत्र।
3. स्वतंत्र भारत में माध्यमिक शिक्षा का मात्रात्मक एवं गुणात्मक विकास।

इकाई–द्वितीय

1. मध्यमिक शिक्षा का सार्वभौमीकरण।
2. मध्यमिक शिक्षा के पुनर्मूल्यांकन के लिए गठित आयोग एवं समितियों से सुझाव– मुदालियर आयोग (1952–53), कोठारी आयोग (1964–66) नई शिक्षानीति (1986), POA(1992).
3. भारत में माध्यमिक शिक्षा का स्वरूप एवं प्रकार, विशिष्ट विद्यालय, खुला विद्यालय, वैकल्पिक विद्यालय (Alternative School) विभिन्न राज्यों में माध्यमिक शिक्षा की वर्तमान स्थिति एवं बदलते परिदृश्य।
4. माध्यमिक शिक्षा का पाठ्यक्रम NCF 2005, माध्यमिक शिक्षा की माध्यम भाषा, कौशल आधारित माध्यमिक शिक्षा।

इकाई–तृतीय

1. माध्यमिक शिक्षा के अध्यापकों की तैयारी, सेवाकालीन एवं पूर्व सेवाकालीन प्रशिक्षण।
2. अध्यापकों की श्रेणियां, वेतन व सेवाशर्तें।
3. शिक्षक संघ एवं उनकी भूमिका।
4. पाठ्यक्रम निर्माण स्कूल प्रबन्धन एवं पाठ्यसहगामी क्रियाओं में शिक्षक की भूमिका।
5. शिक्षकों में व्यावसायिक नैतिकता एवं शिक्षणीय मूल्यों के संवर्द्धन के उपाय।

इकाई–चतुर्थ

1. समावेशी शिक्षा – अवधारणा, आवश्यकता एवं महत्व विशिष्ट समावेशी एवं समाकलित शिक्षा में अन्तर।
2. आदर्श समावेशी विद्यालय का सृजन, भौतिक सुविधायें, समावेशी शिक्षा के गुण।
3. दृष्टि बाधित, श्रवण बाधित, मानसिक मन्दता अधिगम–अक्षमता एवं विकलांगता से पीड़ित बालकों की विशिष्ट शैक्षिक आवश्यकतायें।
4. अक्षम बालकों के सामाजिक एवं शैक्षिक अधिकार, तत्सम्बन्धी सरकारी नीतियां एवं संस्थायें।
5. समावेशी विद्यालय के शिक्षण उपागम–विशिष्ट समूहों के लिये विशेष कक्षायें, समूह दत्त कार्य अन्य उपचारात्मक युक्तियां।

आंतरिक आंकलन

पूर्णांक–20

– आंतरिक आंकलन हेतु एसाइनमेन्ट, परीक्षण, प्रोजेक्ट, प्रस्तुतीकरण, प्रायोगिक कार्य इत्यादि।

समायक ग्रन्थ –

1. कुमार, संजीव, विशिष्ट बालक।
2. सिंघल, रमेश चन्द, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान ग्रन्थ एकेडमी, जयपुर।
3. अग्रवाल, जे.सी., राष्ट्रीय शिक्षा नीति, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. Narayan, J.-Educating children with learning Problems in Regular Schools, Sikandrabad, NIMH.
5. Mangal S.K. (2009) – Educating Exceptional Children : An Introduction to special education, Prentice Hall of India, Delhi.
6. Nurullah and Naik – History of Education in India, New Delhi.
7. Agrawal, j.C.- Naik, History of Education in Free India, Agra.
8. MHRD – Secondary Education commission report (1953) Govt. of India, New Delhi.
9. MHRD- Indian Education commission report (1966) Govt. of India, New Delhi.
10. NCERT – Fifth all India Educational Survey, Report.
11. Corbelt Jenny (2001) Supporting inclusive education Poutlodge Falmer.

Vishakha

चतुर्थ प्रश्न पत्र

कोर्स कोड 2A (?)

समाज एवं शिक्षा के विविध संदर्भ

क्रेडिट–4 घंटे : 60 पूर्णांक–[illegible]

कोर्स उद्देश्य –

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]

भारतीय समाज और शिक्षा के [illegible]

पूर्णांक–[illegible]

इकाई–प्रथम

1. शिक्षा और समाज के [illegible]
2. [illegible]
3. स्त्री–पुरुषों के [illegible]

इकाई–द्वितीय

1. [illegible]
2. परिवार के सामाजिक पृष्ठभूमि का स्त्री शिक्षा पर प्रभाव।
3. [illegible] दूर करने में शिक्षक की भूमिका।

इकाई–तृतीय

1. [illegible]
2. [illegible]
3. समाज एवं शिक्षा में [illegible] की भूमिका।

आंतरिक आंकलन

पूर्णांक–25

– आंतरिक आंकलन हेतु एसाइनमेंट, सेमिनार, प्रोजेक्ट, प्रस्तुतीकरण, प्रायोगिक कार्य इत्यादि।

सहायक ग्रन्थ –

1. चक्रवर्ती, उमा (2011) पितृ सत्तात्मक समाज में नारी, नई दिल्ली।
2. मेनन, एन, लोकनीताजेआई एस., नारीवादी राजनीति संघर्ष और मुद्दे। दिल्ली विश्वविद्यालय।

3- Bhasin, Kamala (2000) understanding Gender, New Delhi.

4- N.C.E.R.t.(2006) National Focus Group on Gender Issues in Educations, New Delhi.

5- Ramchandran, Vimala (2004) Gender and Social Equity in Education, New Delhi.

चतुर्थ प्रश्न पत्र
कोर्स कोड 204 (ख)
शान्ति एवं सद्भाव के लिये शिक्षा

क्रेडिट–4 घण्टे : 60 पूर्णांक–80+20=100

कोर्स लक्ष्य –

1. छात्राध्यापक शान्ति के लिये शिक्षा के महत्व को समझ सकेंगे।
2. शिक्षा और समाज में अशांति के लिये उत्तरदायी तत्वों का विश्लेशण कर सकेंगे।
3. जीवन में शान्ति की आवश्यकता एवं महत्व को अनुभव कर सकेंगे।
4. विद्यालयी पाठ्यक्रम में शांति व सद्भाव के लिये शिक्षा के पाठ्यक्रम एवं विधितंत्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेंगे।

पूर्णांक–80

इकाई–प्रथम

1. शांति के लिये शिक्षा–अर्थ आवश्यकता उद्देश्य एवं महत्व।
2. शांति भंग के लिये उत्तरदायी कारक–बेरोजगारी, शोषण आंतकवाद आदि मनोवैज्ञानिक कारक, शान्ति के लिये शिक्षा का पाठ्यक्रम में स्थान, पाठ्यपुस्तकों का विकास।

इकाई–द्वितीय

1. समाजिक शान्ति एवं सद्भाव के कारक सामाजिक न्याय, आर्थिक विकास के समान अवसर शैक्षिक समानता, सामाजिक सहिश्णुता एवं सदभाव के लिये शैक्षिक कार्यक्रम।
2. वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन में समरसता का महत्व।

इकाई–तृतीय

1. किशोर मनोविज्ञान–नशाखोरी, अपराध, हिंसा और अनुशासनहीनता के कारण एवं निवारण के उपाय।
2. सामाजिक भेदभाव के राजनीतिक कारक और उनके निवारण के उपाय।

इकाई–चतुर्थ

1. सकरात्मक दृष्टिकोण के विकास की प्रक्रिया।
2. कक्षा: छात्रावास, विद्यालय परिसर एवं समाज के अन्य स्थानो पर नैतिक एवं सकारात्मक मूल्याधारित कार्य संस्कृति का विकास।
3. मानव जीवन में संस्कारों के विविध पक्ष और उसका महत्व।

आंतरिक आंकलन

पूर्णांक–20

– आंतरिक आंकलन हेतु एसाइनमेन्ट, परीक्षण, प्रोजेक्ट, प्रस्तुतीकरण, प्रायोगिक कार्य इत्यादि।

सहायक ग्रन्थ-

1. Pandey, S (2004) Education for peace self instructional packages for teacher Education
2. Kali for women (2003) Terror Counter Terror New Delhi
3. Rauda N C (1992) Manifesto for peaceful world order : A gandhian perspective, Gandhi Bhavan, new Delhi
4. Delors, J (1996) Learning the treasure within report of International Commission on Education for the 21th Century, London.

चतुर्थ प्रश्न पत्र
कोर्स कोड 204 (ग)
शैक्षिक निर्देशन और परामर्श

क्रेडिट–4 | घण्टे : 60 | पूर्णांक–80+20=100

कोर्स लक्ष्य –

1. छात्राध्यापक विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श की आवश्यकता एवं महत्व को ज्ञात कर सकेंगे।
2. वे निर्देशन व परामर्श के अर्थ, सिद्धान्त, प्रकार और विधियों को ज्ञात कर सकेंगे।
3. उनमें विभिन्न प्रकार के बालकों को उचित निर्देशन और परामर्श देने की क्षमता का विकास होगा।

पूर्णांक–80

इकाई–प्रथम
1. निर्देशन–अर्थ, आवश्यकता एवं महत्व।
2. निर्देशन के सिद्धान्त और विधियां।
3. निर्देशन में विद्यालय की भूमिका।
   निर्देशन के प्रकार– वैयक्तिक, शैक्षिक, व्यावसायिक।

इकाई–द्वितीय
1. निर्देशन के उपकरण–विद्यालय अभिलेख, साक्षात्कार, मनोवैज्ञानिक परीक्षण, प्रश्नावली प्रेक्षण।

इकाई–तृतीय
1. परामर्श–अर्थ, आवश्यकता एवं महत्व।
2. परामर्श के सिद्धान्त और विधियां
3. परामर्श के प्रकार और प्रक्रिया।

इकाई–चतुर्थ
1. विद्यालय काउन्सलर की विशेषताएँ एवं कर्तव्य।
2. वैयक्तिक एवं समूह काउंसलिंग।
3. विशिष्ट बालकों की काउंसलिंग।
4. अभिभावकों के लिए काउंसलिंग।

आंतरिक आंकलन
पूर्णांक–20
– आंतरिक आंकलन हेतु एसाइनमेन्ट, परीक्षण, प्रोजेक्ट, प्रस्तुतीकरण, प्रायोगिक कार्य इत्यादि।

Vishal Shri

सहायक ग्रन्थ

1. Agrawal R.(2006): Educational vocational Guidance and counsilling Shipra Pub.New Delhi.
2. Chauhan S.S.(2007) Principle and Technique of guidance Vikas Pub.New Delhi.
3. Kochar, S.K.(2006) Educational and vocational Guidance in a secondary education, sterling Pub.Delhi.
4. Naik D (2007) Fundamentals of Guidance counseling, Adhyan Pub.New Delhi.

Vishwh Sh

चतुर्थ प्रश्न पत्र
कोर्स कोड 204 (घ)
पर्यावरण शिक्षा

क्रेडिट–4 **घण्टे : 60** **पूर्णांक–80+20=100**

कोर्स लक्ष्य –

1. छात्राध्यापक पर्यावरण शिक्षा के अर्थ आवश्यकता एवं महत्व को समझ सकेंगे।
2. पर्यावरण शिक्षा के प्रति रूचि उत्पन्न हो सकेगी।
3. वे पर्यावरण प्रदूषण की वैश्विक समस्याओं के प्रति संवेदनशील हो सकेंगे।
4. प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा के प्रति उचित अभिवृत्ति का विकास हो सकेगा।
5. पर्यावरण सन्तुलन के प्रति उचित मूल्यों का विकास हो सकेगा।

पूर्णांक–80

इकाई–प्रथम

1. अर्थ, आवश्यकता एवं महत्व।
2. विद्यालयीय पाठ्यक्रम में पर्यावरण शिक्षा की वर्तमान स्थिति।
3. पर्यावरण शिक्षा के पाठ्यक्रम की विशेषतायें।

इकाई–द्वितीय

1. पर्यावरण शिक्षा के पाठ्यक्रम की विशेषतायें बहुविषयात्मक एवं सहसम्बन्धात्मक।
2. पर्यावरण शिक्षा की विधियॉं, योजना विधि, प्रयोग, सर्वेक्षण समस्या समाधान, Video Projection.
3. प्रकृति और मानव जीवन की पारस्परिकताः पर्यावरणीय समस्याएं तथा उससे सम्बन्धित नैतिक तथा मानवीय मूल्य।

इकाई–तृतीय

1. प्राकृतिक पर्यावरण एवं मनुष्य।
2. प्राकृतिक पर्यावरण–संरचना, प्रकार, कार्य, भोजन श्रृंखला।
3. संवहनीय विकास (Sustainable Development) में शिक्षा की भूमिका।

इकाई–चतुर्थ

1. पर्यावरण–प्रदूषण, अर्थ, प्रकार, भूमिका।
2. जल, वायु व ध्वनि प्रदूषण के कारण एवं परिणाम।
3. प्रदूषण नियंत्रण के उपाय।

इकाई–पंचम

1. पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता।
2. वर्षा, जल संचयन, ओजोन परत संरक्षण।
   ग्रीन हाउस प्रभाव, ग्लोबल वार्मिंग, अम्ल वर्षा।

आंतरिक आंकलन

पूर्णांक–20

– आंतरिक आंकलन हेतु एसाइनमेन्ट, परीक्षण, प्रोजेक्ट, प्रस्तुतीकरण, प्रायोगिक कार्य इत्यादि।

सहायक ग्रन्थ –

1. व्यास हरिश्चन्द्र (2001) पर्यावरण शिक्षा नई दिल्ली विद्याविहार।
2. सक्सेना हरिमोहन (2003) पर्यावरण अध्ययन, श्री गंगानगर, अग्रवाल साहित्य सदन।
3. श्रीवास्तव पंकज, पर्यावरण शिक्षा, भोपाल, मध्यप्रदेश।
4. सक्सेना, ए.वी.,पर्यावरण ग्रन्थ एकादमी, नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो।
5. UNESCO 1990 Source book in Invironment Education for.
6. Secondary School eacher Bangkok (NCERT) 1981 Environmental at School Level New Delhi.
7. Palmen, Joy A (1998) Environmental Education in the 2th Century London.
8. Sharma R.C. 1981 Environmental Education New Delhi.

Vishalch Sh

चतुर्थ प्रश्न पत्र
कोर्स कोड 204 (ङ)
योग शिक्षा

क्रेडिट–4 **घण्टे : 60** **पूर्णांक–80+20=100**

कोर्स लक्ष्य –

1. छात्राध्यापक उत्तम शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य के लिये योग के महत्व को समझ सकेंगे।
2. छात्राध्यापक योग की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, पृष्ठभूमि से अवगत हो सकेंगे।
3. छात्राध्यापक प्रमुख योग साहित्य से परिचित हो सकेंगे।
4. छात्राध्यापक तनाव व मानसिक असन्तुलन दूर करने में योग की भूमिका को जान सकेंगे।
5. छात्राध्यापक बालकों के लिये उपयोगी, आसन, प्राणायाम आदि कार्यक्रमों का नेतृत्व कर सकेंगे।

पूर्णांक–80

इकाई–प्रथम

1. योग–अर्थ परिभाषा, ऐतिहासिक एवं दार्शनिक पृष्ठभूमि।
2. आसन और प्राणायाम प्रकार और उपयोगिता।
3. ध्यान–अर्थ, प्रकार और प्रभाव।
   छात्रों के लिए उपयोगी क्रियायें।

इकाई– द्वितीय

1. पातंज्जल योगसूत्र–परिचय, चितवृत्ति निरोध, ईश्वर और मोक्ष की अवधारणा योगी के लक्षण।
2. योग और स्वास्थ्य, सन्तुलित आहार, स्वास्थ्य और योगासन।
3. बुद्धि और सृजनात्मकता के विकास में योग की भूमिका, तनाव और मानसिक अंसतुलन दूर करने में योग की भूमिका।
4. प्रायोगिक कार्य –
   सूर्यनस्कार, प्राणायाम और छात्रोपयोगी आसनों का अभ्यास।

इकाई–3

1. आत्म विकास की अवधारणा एवं प्रकृति।
2. बच्चों में मूल्य विकास करने में योग की भूमिका।
3. योग व मानव उत्कर्ष (व्यक्तित्व विकास)।

आंतरिक आंकलन

पूर्णांक–20

– आंतरिक आंकलन हेतु एसाइनमेन्ट, परीक्षण, प्रोजेक्ट, प्रस्तुतीकरण, प्रायोगिक कार्य इत्यादि।

सहायक ग्रन्थ

1. कुवलयान्दाचार्य और ए.एल.विनेकर (1983) – प्राणायाम पापुलर प्रकाशन मुम्बई।
2. कुवलयानन्दाचार्य और ए.एल.विनेकर (1983) – आसन।
3. Gupta S.N.Das (1987) Yoga Phiosophic on Relation to other system of Indian thought New Delhi, Motilal Banarasidas Publication.
4. Nagendra H.R.: Yoga in Education Banglore Vivekanand Kendra.
5. Raju.P.T.(!982) The Philosophical Tradision of India Delhi Motilal Banarasidas.